दलहन फसलों के अनुसंधान, उत्पादन, फसल सुधार एवं संरक्षण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिकों ने किया मंथन

वैज्ञानिकों के साथ बैठक करते सीएसए के कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता व अन्य।

कानपुर, 30 अगस्त। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक के अंतिम दिन समापन समारोह में वर्ष 2026-27 के लिए रबी दलहन अनुसंधान की तकनीकी कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। दो दिवसीय इस महत्वपूर्ण कृषि वैज्ञानिकों की बैठक में देशभर से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों एवं विषय विशेषज्ञों ने रबी दलहन फसलों के अनुसंधान, उत्पादन, फसल सुधार एवं फसल संरक्षण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर गहन मंथन किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए सीएसए के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता ने कहाकि बैठक में तैयार की गई तकनीकी कार्ययोजना से रबी दलहन फसलों की उत्पादकता, गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ किसानों के लिए उन्नत तकनीकों के प्रभावी हस्तांतरण को गति मिलने की उम्मीद है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि देश में दलहन उत्पादन को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और खेत स्तर पर तकनीक के प्रभावी प्रसार के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है। समारोह में डॉ. एस.के. झा, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), आईसीएआर ने अपने विचार रखते हुए रबी दलहन अनुसंधान को किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाने तथा विकसित तकनीकों को खेत तक पहुंचाने पर जोर दिया। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, के निदेशक डॉ जी पी दीक्षित तथा सहायक महानिदेशक (बीज), आईसीएआर डॉ बी आर चौधरी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस सत्र में वैज्ञानिकों ने विभिन्न तकनीकी क्षेत्रों में तैयार की गई कार्ययोजनाओं एवं अनुशंसाओं को प्रस्तुत किया गया। समारोह में फसल सुधार, फसल उत्पादन तथा फसल संरक्षण से संबंधित आगामी वर्ष के तकनीकी कार्यक्रमों पर विस्तार से विचार किया गया। डॉ. ए.के. परिहार ने फसल सुधार और फसल उत्पादन के अंतर्गत कृषि विज्ञान एवं सूक्ष्मजीव विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम क्रमशः डॉ. नरेंद्र कुमार एवं डॉ. के. स्वर्णलक्ष्मी द्वारा प्रस्तुत किए गए। फसल संरक्षण के अंतर्गत पादप रोग विज्ञान तथा कीट एवं सूत्रकृमि विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में परियोजना समन्वयक डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

रबी दलहन अनुसंधान की आगामी कार्ययोजना के लिये बनी रूपरेखा

CMYK

अनुसंधान व खेती के तकनीकी प्रसार में सामंजस्य जरूरी

कानपुर। देश को दलहन पैदावार में आत्मनिर्भर बनाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और खेत स्तर पर तकनीक के प्रभावी प्रसार के बीच बेहतर सामंजस्य जरूरी है। यह बात सीएसए विवि के कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता ने कही।

सीएसए में दो दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक का रविवार को समापन हुआ। आईसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ. एसके झा ने कहा कि रबी दलहन अनुसंधान को किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाने तथा विकसित तकनीकों को खेत तक पहुंचाने पर प्रभावी कार्ययोजना बनाना जरूरी है। आईआईपीआर के निदेशख डॉ. जीपी दीक्षित, आईसीएआर (बीज) के सहायक महानिदेशक डॉ. बीआर चौधरी ने भी जानकारी दी। डॉ. एके परिहार ने फसल सुधार, डॉ. नरेंद्र कुमार ने कृषि विज्ञान, डॉ. के स्वर्ण लक्ष्मी ने सूक्ष्मजीव विज्ञान से जुड़ी जानकारी दी। इस मौके पर डॉ. खलील खान, डॉ. शैलेश त्रिपाठी रहे।

केनरा बैंक

अमर उजाला 31/08/2026

सीएसए : रबी दलहन का उत्पादन, गुणवत्ता बढ़ाने की कार्ययोजना तैयार

सीएसए में 31वीं समूह बैठक के समापन के दौरान शामिल अतिथि। स्रोत: संस्थान

माई सिटी रिपोर्टर

अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की बैठक संपन्न

सीएसए में हुआ आयोजन, देश भर के कृषि वैज्ञानिक जुटे

कानपुर। रबी दलहन का उत्पादन, गुणवत्ता और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कार्ययोजना तैयार हो गई है। इसे नई तकनीक, उन्नत किस्म के साथ किसानों तक पहुंचाया जाएगा। इसकी रणनीति रविवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में संपन्न हुई अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक में तैयार की गई।

इसमें फसल सुधार, उत्पादन, संरक्षण से जुड़े कई अहम कार्यक्रम शामिल हैं। कार्ययोजना कृषि मंत्रालय को भेजी जाएगी। दो दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक में वर्ष 2026-27 के लिए रबी दलहन अनुसंधान की तकनीकी कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। देशभर के विशेषज्ञों ने मंथन के आधार पर तकनीकी कार्ययोजना तैयार की। जिससे रबी दलहन फसलों की उत्पादकता, गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ किसानों के लिए उन्नत तकनीकों के प्रभावी हस्तांतरण को गति मिलने की उम्मीद है। कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता ने कहा कि देश को दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनुसंधान और खेत स्तर पर तकनीक के प्रभावी प्रसार के बीच बेहतर सामंजस्य जरूरी है।

आईसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ. एसके झा ने कहा कि रबी दलहन अनुसंधान को किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाने और विकसित तकनीकों को खेत तक पहुंचाने पर प्रभावी कार्ययोजना बनाना जरूरी है।

आईआईपीआर निदेशक डॉ. जीपी दीक्षित, आईसीएआर (बीज) के सहायक महानिदेशक डॉ. बीआर चौधरी ने दलहन की तकनीकी जानकारीदी। डॉ. एके परिहार, डॉ. नरेंद्र कुमार, डॉ. के स्वर्ण लक्ष्मी, डॉ. शैलेश त्रिपाठी, डॉ. खलील खान समेत सभी वैज्ञानिक मौजूद रहे।

खेत तक पहुंचेगी शोध की तकनीक तभी आत्मनिर्भर होगा दलहन उत्पादन

- रबी दलहन अनुसंधान की 31वीं वार्षिक बैठक का समापन
- वर्ष 2026-27 की कार्ययोजना को दिया गया अंतिम रूप

जागरण संवाददाता, कानपुर : देश को दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयोगशाला में हो रहे अनुसंधान और खेत में उसके उपयोग के बीच बेहतर सामंजस्य जरूरी है। विज्ञानियों द्वारा विकसित तकनीक का लाभ तभी मिलेगा, जब उसका प्रभावी ढंग से किसानों तक हस्तांतरण हो। यह बात चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कुलपति डा. संजीव गुप्ता ने रविवार को कही। वह सीएसए में आयोजित अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

बैठक में कुलपति डा. संजीव गुप्ता व देशभर से आए कृषि विज्ञानी • सीएसए

दो दिवसीय बैठक के अंतिम दिन वर्ष 2026-27 के लिए रबी दलहन अनुसंधान की तकनीकी कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। देशभर से आए कृषि विज्ञानियों और विषय विशेषज्ञों ने रबी दलहन फसलों की उत्पादकता, गुणवत्ता, फसल सुधार और संरक्षण से जुड़े विषयों पर मंथन किया।

आइसीएआर (तिलहन एवं दलहन) के सहायक महानिदेशक डा.एसके झा ने कहा कि अनुसंधान को किसानों की जरूरतों के अनुरूप बनाने के साथ विकसित तकनीक को खेत तक पहुंचाने के लिए प्रभावी कार्ययोजना जरूरी है। उन्होंने कहा कि आइसीएआर संस्थान के पास जीन बैंक बना है, जिसमें 4.7 लाख फसलों की आनुवांशिक सामग्री को सुरक्षित व संरक्षित है। एआइ व अत्याधुनिक तकनीक की मदद इन आनुवांशिक सामग्री का एनालिसिस कर नई प्रजाति विकसित करेंगे। यह प्रजाति अत्यधिक प्रभावी व गुणवत्तायुक्त होगी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में सभी प्रजाति जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रख विकसित की जा रही है। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान निदेशक डा.जीपी दीक्षित और आइसीएआर (बीज) के सहायक महानिदेशक डा.बीआर चौधरी ने भी विचार रखे। आगामी वर्ष के लिए फसल सुधार, फसल उत्पादन और फसल संरक्षण से जुड़े तकनीकी कार्यक्रमों पर चर्चा हुई। डा.एके परिहार ने फसल सुधार, डा.नरेंद्र कुमार ने कृषि विज्ञान और डा. के.स्वर्णलक्ष्मी ने सूक्ष्मजीव विज्ञान पर कार्ययोजना प्रस्तुत की।

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

क 219 | लखनऊ व एटा से प्रकशित सोमवार ,31 अगस्त 2026 | पृष्ठ : 4 | मूल्य :

रबी दलहन अनुसंधान की आगामी कार्ययोजना को मिली अंतिम रूपरेखा

अनवर अशरफ

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक के अंतिम दिन आज रविवार को आयोजित समापन समारोह में वर्ष 2026-27 के लिए रबी दलहन अनुसंधान की तकनीकी कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। दो दिवसीय इस महत्वपूर्ण वैज्ञानिक बैठक में देशभर से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा रबी दलहन फसलों के अनुसंधान, उत्पादन, फसल सुधार एवं फसल संरक्षण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर गहन मंथन किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता सीएसए के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता द्वारा की गई तथा सह-अध्यक्षता आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. एस.के. झा ने की। डॉ. संजीव गुप्ता, कुलपति द्वारा अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि बैठक में तैयार की गई तकनीकी कार्ययोजना से रबी दलहन फसलों की उत्पादकता, गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ किसानों के लिए उन्नत तकनीकों के प्रभावी हस्तांतरण को गति मिलने की उम्मीद है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि देश में दलहन उत्पादन को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और खेत स्तर पर तकनीक के प्रभावी प्रसार के बीच बेहतर

समन्वय आवश्यक है।समारोह में डॉ. एस.के. झा, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), आईसीएआर ने अपने विचार रखते हुए रबी दलहन अनुसंधान को किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाने तथा विकसित तकनीकों को खेत तक पहुंचाने पर जोर दिया। कार्यक्रम में निदेशक, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान डॉ जी पी दीक्षित तथा सहायक महानिदेशक (बीज), आईसीएआर डॉ बी आर चौधरी द्वारा भी विचार व्यक्त किया गया।इस सत्र में वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न तकनीकी क्षेत्रों में तैयार की गई कार्ययोजनाओं एवं अनुशंसाओं को प्रस्तुत किया गया।समापन समारोह में फसल सुधार, फसल उत्पादन तथा फसल संरक्षण से संबंधित आगामी वर्ष के तकनीकी कार्यक्रमों पर विस्तार से विचार किया गया। फसल सुधार के अंतर्गत डॉ. ए.के. परिहार द्वारा, जबकि फसल उत्पादन के अंतर्गत कृषि विज्ञान एवं सूक्ष्मजीव विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम क्रमशः डॉ. नरेंद्र कुमार एवं डॉ. के. स्वर्णलक्ष्मी द्वारा प्रस्तुत किए गए। फसल संरक्षण के अंतर्गत पादप रोग विज्ञान तथा कीट एवं सूत्रकृमि विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के अंत में अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना के परियोजना समन्वयक डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इसके साथ ही दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का समापन हुआ।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 18 अंक : 63 कानपुर, सोमवार 31 अगस्त 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

रबी दलहन अनुसंधान की आगामी कार्ययोजना को मिली अंतिम रूपरेखा

कानपुर। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक के अंतिम दिन रविवार को आयोजित समापन समारोह में वर्ष 2026-27 के लिए रबी दलहन अनुसंधान की तकनीकी कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। दो दिवसीय इस महत्वपूर्ण वैज्ञानिक बैठक में देशभर से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा रबी दलहन फसलों के अनुसंधान, उत्पादन, फसल सुधार एवं फसल संरक्षण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर गहन मंथन किया गया।

समापन समारोह की अध्यक्षता सीएसए के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता द्वारा की गई तथा सह-अध्यक्षता आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. एस.के. झा ने की। डॉ. संजीव गुप्ता, कुलपति द्वारा अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि बैठक में तैयार की गई तकनीकी कार्ययोजना से रबी दलहन फसलों की उत्पादकता, गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ किसानों के लिए उन्नत तकनीकों के प्रभावी

हस्तांतरण को गति मिलने की उम्मीद है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि देश में दलहन उत्पादन को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और खेत स्तर पर तकनीक के प्रभावी प्रसार के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है।समारोह में डॉ. एस.के. झा, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), आईसीएआर ने अपने विचार रखते हुए रबी दलहन अनुसंधान को किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाने तथा विकसित तकनीकों को खेत तक पहुंचाने पर जोर दिया। कार्यक्रम में निदेशक, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान डॉ जी पी दीक्षित तथा सहायक महानिदेशक (बीज), आईसीएआर डॉ बी आर चौधरी द्वारा भी विचार व्यक्त किया गया।इस सत्र में वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न तकनीकी क्षेत्रों में तैयार की गई कार्ययोजनाओं एवं अनुशंसाओं को प्रस्तुत किया गया।समापन समारोह में फसल सुधार, फसल उत्पादन तथा फसल संरक्षण से संबंधित आगामी वर्ष के तकनीकी कार्यक्रमों पर विस्तार से विचार किया गया। फसल सुधार के अंतर्गत डॉ. ए.के. परिहार द्वारा, जबकि फसल उत्पादन के अंतर्गत कृषि विज्ञान एवं सूक्ष्मजीव विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम क्रमश: डॉ. नरेंद्र कुमार एवं डॉ. के. स्वर्णलक्ष्मी द्वारा प्रस्तुत किए गए। फसल संरक्षण के अंतर्गत पादप रोग विज्ञान तथा कीट एवं सूत्रकृमि विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के अंत में अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना के परियोजना समन्वयक डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इसके साथ ही दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का समापन हुआ।

बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र
दीक्षालय प्रवाह
!! अपना शहर !!

रबी दलहन अनुसंधान की आगामी कार्ययोजना को मिली अंतिम रुपरेखा

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक के अंतिम दिन आज रविवार को आयोजित समापन समारोह में वर्ष 2026–27 के लिए रबी दलहन अनुसंधान की तकनीकी कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। दो दिवसीय इस महत्वपूर्ण वैज्ञानिक बैठक में देशभर से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा रबी दलहन फसलों के अनुसंधान, उत्पादन, फसल सुधार एवं फसल संरक्षण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर गहन मंथन किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता सीएसए के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता द्वारा की गई तथा सह–अध्यक्षता आईसीएआर के सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. एस.के. झा ने की। डॉ. संजीव गुप्ता, कुलपति द्वारा अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि बैठक में तैयार की गई तकनीकी कार्ययोजना से रबी दलहन फसलों की उत्पादकता, गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ–साथ किसानों के लिए उन्नत तकनीकों के प्रभावी हस्तांतरण को गति मिलने की उम्मीद है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि देश में दलहन उत्पादन को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और खेत स्तर पर तकनीक के प्रभावी प्रसार के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है।समारोह में डॉ. एस.के. झा, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), आईसीएआर ने अपने विचार रखते हुए रबी दलहन अनुसंधान को किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाने तथा विकसित तकनीकों को खेत तक पहुंचाने पर जोर दिया। कार्यक्रम में निदेशक, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान डॉ जी पी दीक्षित तथा सहायक महानिदेशक (बीज), आईसीएआर डॉ बी आर चौधरी द्वारा भी विचार व्यक्त किया गया।इस सत्र में वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न तकनीकी क्षेत्रों में तैयार की गई कार्ययोजनाओं एवं अनुशंसाओं को प्रस्तुत किया गया।समापन समारोह में फसल सुधार, फसल उत्पादन तथा फसल संरक्षण से संबंधित आगामी वर्ष के तकनीकी कार्यक्रमों पर विस्तार से विचार किया गया। फसल सुधार के अंतर्गत डॉ. ए. के. परिहार द्वारा, जबकि फसल उत्पादन के अंतर्गत कृषि विज्ञान एवं सूक्ष्मजीव विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम क्रमशः डॉ. नरेंद्र कुमार एवं डॉ. के. स्वर्णलक्ष्मी द्वारा प्रस्तुत किए गए। फसल संरक्षण के अंतर्गत पादप रोग विज्ञान तथा कीट एवं सूत्रकृमि विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के अंत में अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना के परियोजना समन्वयक डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इसके साथ ही दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का समापन हुआ।

Times Of India 31/08/2026

Experts discuss tech action plan for rabi pulse research

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: The technical action plan for rabi pulse research for 2026-27 was given final shape at the closing ceremony of the 31st Annual Group Meeting of the All India Coordinated Rabi Pulses Research Project at Chandrashekhar Azad University of Agriculture and Technology, Kanpur, on Sunday. During the meet, scientists and experts held detailed deliberations on research, production, crop improvement and crop protection of rabi pulse crops.

The closing ceremony was chaired by CSA vice-chancellor Dr Sanjeev Gupta, while ICAR assistant director general (Oilseeds and Pulses) Dr S K Jha co-chaired it. Director, Bharatiya Dalhan Anusandhan Sansthan, Dr GP Dixit, and assistant director general (Seeds), ICAR, Dr B R Chaudhary, also expressed their views.

Project coordinator of the All India Coordinated Rabi Pulses Research Project, Dr Shailesh Tripathi, delivered the vote of thanks.